❍ 05 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *अति मीठा बनकर रहे ?*

➢➢ *रूहानी नशे में रह सर्विस की ?*

➢➢ *अटेंशन की विधि द्वारा माया की छाया से स्वयं को सेफ रखा ?*

➢➢ *हर संकल्प में उमंग उत्साह रहा ?*

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *किसी कमजोर आत्मा की कमजोरी को न देखो। यह स्मृति में रहे कि वैराइटी आत्मायें हैं। सबके प्रति आत्मिक दृष्टि रहे।* आत्मा के रुप में उनको स्मृति में लाने से पावर दे सकोगे। आत्मा बोल रही है, आत्मा के यह संस्कार हैं, *यह पार्ट पक्का करो तो सबके प्रति स्वत: शुभ भावना रहेगी।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बापदादा की छत्रछाया के अन्दर रहने वाली विशेष आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को सदा बाप की याद की छत्रछाया के अन्दर अनुभव करते हो? जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेली नहीं लेकिन बाप-दादा सदा साथ है। *कोई भी समस्या सामने आयेगी तो अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे, इसलिए घबरायेंगे नहीं।* कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा।

〰✧ कभी भी कोई ऐसी बात सामने आवे तो बाप-दादा की स्मृति रखते अपना बोझ बाप के ऊपर रख दो तो हल्के हो जायेंगे। क्योंकि बाप बड़ा है और आप छोटे बच्चे हो। बड़ों पर ही बोझ रखते हैं। *बोझ बाप पर रख दिया तो सदा अपने को खुश अनुभव करेंगे।* फरिश्ते के समान नाचते रहेंगे। दिन रात 24 ही घंटे मन से डाँस करते रहेंगे।

〰✧ देह अभिमान में आना अर्थात् मानव बनना। *देही अभिमानी बनना अर्थात् फरिश्ता बनना। सदैव सवेरे उठते ही अपने फरिश्ते स्वरूप की स्मृति में रहो और खुशी में नाचते रहो तो कोई भी बात सामने आयेगी उसे खुशी-खुशी से क्रास कर लेंगे।* जैसे दिखाते हैं - देवियों ने असुरों पर डाँस किया। तो फरिश्ते स्वरूप की स्थिति में रहने से आसुरी बातों पर खुशी की डाँस करते रहेंगे। फरिश्ते बन फरिश्तों की दुनिया में चले जायेंगे। फरिश्तों की दुनिया सदा स्मृति में रहेगी।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आप सबका लक्ष्य क्या है? कर्मातीत बनना है ना! या थोडा-थोडा कर्मबन्धन रहा तो कोई हर्जा नहीं? रहना चाहिए या नहीं रहना चाहिए? कर्मातीत बनना है? *बाप से प्यार की निशानी है - कर्मातीत बनना।* तो 'करावनहार' होकर कर्म करो, कराओ, कर्मेन्द्रियाँ आपसे नहीं करावें लेकिन आप कर्मेन्द्रियों से कराओ।

〰✧ बिल्कुल अपने को न्यारा समझ कर्म कराना - यह कान्सेसनेस इमर्ज रूप में हो। मर्ज रूप में नहीं। मर्ज रूप में कभी 'करावनहार' के बजाए कर्मेन्द्रियों के अर्थात मन के, बुद्धि के, संस्कार के वश हो जाते हैं। कारण? *'करावनहार' आत्मा हूँ मालिक हूँ विशेष आत्मा, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ यह स्मृति मालिक-पन की स्मृति दिलाती है।*

〰✧ नहीं तो कभी मन आपको चलाता और कभी आप मन को चलाते। इसलिए सदा नेचुरल मनमनाभव की स्थिति नहीं रहती। मैं अलग हूँ बिल्कुल, और सिर्फ अलग नहीं लेकिन मालिक हूँ, *बाप को याद करने से मैं बालक हूँ और मैं आत्मा कराने वाली हूँ तो मालिक हूँ। अभी यह अभ्यास अटेन्शन में कम है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ अब आपका गोपीपन का पार्ट समाप्त हुआ। महारथी जो आगे बढ़ते जा रहे हैं, उनका इस रीति सर्विस करने का पार्ट भी ऑटोमेटिकली बदली होता जाता है। *पहले आप लोग भाषण आदि करती थीं और कोर्स कराती थीं। अभी चेयरमैन के रूप में थोड़ा बोलती हो, कोर्स आदि आपके जो साथी हैं वह कराते हैं। अभी इस समय कोई को आकर्षण करना, हिम्मत और हुल्लास में लाना, यह सर्विस रह गई है, तो फ़र्क आ जाता है ना? इससे भी आगे बढ़ कर यह अनुभव होगा जैसे कि आकाशवाणी हो रही है। कहेंगे यह कोई अवतार हैं और यह कोई साधारण शरीरधारी नहीं हैं।* अवतार प्रगट हुए हैं, जैसे कि साक्षात्कार में अनुभव करते-करते देवी प्रगट हुई है। महावाक्य बोले और प्राय: लोप। *अभी की स्टेज व पुरुषार्थ का लक्ष्य यह होना हैं।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- ज्ञान रत्नों का दान करना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा सागर के किनारे बैठ सागर में उठते हुए लहरों को निहार रही हूँ... ये लहरें कभी हवाओं की बाँहों को थाम आसमान को छूने की कोशिश कर रही हैं... कभी चट्टानों से टकराकर खेल रही हैं... मेरे जीवन की उथल पुथल की लहरों को समाप्त करने वाले ज्ञान सागर बाबा का मैं आत्मा आह्वान करती हूँ...* तुरंत ज्ञान सागर बाबा सागर के किनारे मुस्कुराते हुए खड़े हो जाते हैं... मैं आत्मा होली हंस बन ज्ञान रत्नों को चुगने के लिए ज्ञान सागर में डुबकी लगा देती हूँ...

❉ *विचार सागर मन्थन कर अथाह खजानों से संपन्न बनने के लिए ज्ञान धन का दान करने की युक्ति बतलाते हुए ज्ञान सागर प्यारे बाबा कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वरीय खजानो को बाँहों में भरकर मुस्कराने वाले महान भाग्यवान धनवान् हो... *यह दौलत जितना लुटाओगे अमीरी को अपने इर्दगिर्द सदा ही छलकता पाओगे... इस ज्ञान धन की खान की झलक हर दिल को दिखाओ... सबके जीवन में यह ईश्वरीय बहार खिला आओ..."*

➳ _ ➳ *मैं होलीहंस आत्मा ज्ञान सागर की गहराई में गोते लगाकर मोतियों को चुगते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... *मै आत्मा ईश्वर पिता की गोद में आकर मालामाल हो गई हूँ... कभी दीन हीन और गरीब सी आत्मा आज दौलतमंद हो गई हूँ...* और आप समान सबको धनवान् भाग्यवान बनाकर सुखो के फूल बिखेर रही हूँ..."

❉ *लहराता प्यार का सागर मीठा बाबा प्यार की लहरों से जीवन को

मुस्कराहट देते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... यह ज्ञान धन ही जादूगरी है जो सुखो की खान में बदल जायेगी... दिलो ही दिल में इसे गिनते रहो... और अथाह खजानो को हर दिल पर लुटाओ... *इस अविनाशी ज्ञान धन से सबके जीवन में खुशियो को खिलाओ... सबके दिल आँगन में आनन्द की फिजां महका आओ..."*

➽➝ _ ➽➝ *मैं आत्मा ज्ञान नदी बनकर पूरे विश्व को ज्ञान जल की धाराओं से भिगोते हुए कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा...*मै आत्मा ईश्वरीय ज्ञान धन से सबकी झोली भरकर अथाह सुखो का मालिक बना रही हूँ... मीठे बाबा से पाये अमूल्य खजाने का मालिक हर दिल को बना रही हूँ...* मा ज्ञान सूर्य होकर औरो को भी प्रकाशित कर रही हूँ..."

❊ *ज्ञान के जादूगर मेरे बाबा ज्ञान की छड़ी मुझ आत्मा को देते हुए कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... वरदानी संगम पर ईश्वर पिता से पाये अमूल्य रत्नों को... विचार सागर मन्थन से गहराई से दिल में समाओ... और यह ज्ञान की महक सबके दिलो तक पहुँचाओ... *यह ज्ञान दान महान पुण्य सा प्रतिफल देकर मालामाल करेगा..."*

➽➝ _ ➽➝ *मैं आत्मा ज्ञान की छड़ी घुमाकर सबके जीवन से काँटों को निकालकर ज्ञान के फूलों से सजाते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... *मै आत्मा आपकी फूलो सी गोद में पाये रत्नों को दान कर सबके भाग्य को जगा रही हूँ... फूलो भरी राह पर हर दिल को चला रही हूँ...* जनमो के देह समझ थके पाँवो को सुख भरी मरहम लगा रही हूँ..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रावण के वर्से को हाथ नही लगाना है*"

➳ _ ➳ अपने डबल लाइट फरिश्ता स्वरूप को धारण कर, इस रावण राज्य में रावण के वर्से को अपना समझने वाले, रावण की कैद में फंसे सारी दुनिया के सभी मनुष्य मात्र को देखता हुआ मैं सारे विश्व में भ्रमण करता हुआ जा रहा हूँ। *इस रावण राज्य में एक भी मनुष्य ऐसा दिखाई नही दे रहा जो रावण का वर्सा पाकर सुख का अनुभव कर रहा हो बल्कि वो सभी मनुष्य जो रावण के वर्से को सुख का संसार समझने की भूल कर रहें है वो वास्तव में एक बहुत बड़ी मृगतृष्णा में जी रहें हैं*। क्षणभंगुर सुख को पाने की लालसा में अपने अनमोल हीरे तुल्य जीवन को कौड़ी तुल्य व्यर्थ गंवाते जा रहें हैं।

➳ _ ➳ बेचारे मनुष्य इस बात से भी कितने अंजान है कि राम राज्य स्थापित करने के लिए स्वयं भगवान इस रावण राज्य में आकर 21 जन्मो के लिए अविनाशी सुख, शांति का वर्सा दे रहें हैं। और *कितनी दुर्भाग्यशाली है वो आत्मायें जो रावण के क्षण भर के विनाशी सुख के वर्से को पाने की लालसा में स्वयं भगवान द्वारा मिलने वाले 21 जन्मो के अविनाशी सुख के वर्से को गंवा रही हैं*। ऐसे रावण के वर्से को पाने की इच्छा रखने वाले सारी दुनिया के सभी मनुष्यों को देखता हुआ मैं फरिश्ता विचार करता हूँ कि कितनी सौभाग्यशाली हैं वो ब्राह्मण आत्मायें जिन्हों ने अपने प्रभु राम को पहचान कर, रावण के वर्से को हाथ ना लगाने का प्रण लिया है।

➳ _ ➳ स्वयं के और उन सभी सौभाग्यशाली ब्राह्मण बच्चों के सर्वश्रेष्ठ भाग्य की मन ही मन सराहना करता हुआ अब मैं फरिश्ता अपने भाग्यविधाता भगवान बाप से मिलने और उनसे रावण पर जीत पाने का वरदान प्राप्त करने के लिए उनके अव्यक्त वतन सूक्ष्म लोक की ओर चल पड़ता हूँ। *फरिश्तों की इस दुनिया सूक्ष्म लोक में अपने शिव पिता परमात्मा को उनके भाग्यशाली रथ अव्यक्त ब्रह्मा बाबा के आकारी तन में उनकी भृकुटि पर विराजमान हुए मैं स्पष्ट देख रहा हूँ*। ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में शिव बाबा चमक रहें है और उनके मस्तक से बहुत तेज लाइट माइट निकलकर पूरे वतन में फैल रही है।

➳ _ ➳ बापदादा बड़े प्यार से निहारते हुए अपनी मीठी दृष्टि मुझ पर डाल रहे हैं। उनकी शक्तिशाली दृष्टि से मुझ फरिश्ते के अंदर परमात्म बल भरता जा रहा है जो मझे शक्तिशाली बना रहा है। मैं एकटक उनकी ओर निहार रहा हूँ।

उनकी मीठी दृष्टि में अपने लिए समाये असीम प्यार को देख कर मैं मन ही मन हर्षित हो रहा हूँ। बाबा के पास बैठकर बाबा के घुटनों में अपना सिर रखकर मैं परमात्म प्यार का असीम सुख ले रहा हूँ। अपना वरदानी हाथ बाबा मेरे सिर के ऊपर रख कर मुझे माया रावण के चंगुल से सदा मुक्त रहने का वरदान दे रहें हैं। सिर पर बाबा के हाथों का हल्का - हल्का स्पर्श मुझे परमात्म शक्तियों से भर रहा है।

➳ _ ➳ बाबा से वरदान ले कर, परमात्म शक्तियों से भरपूर हो कर, रावण के वर्से को कभी भी हाथ ना लगाने का बाबा से प्रोमिस करके अब मैं *अपने सभी आत्मा भाइयों को रावण के वर्से से मुक्त कर उन्हें भी अपने प्रभु राम से वर्सा पाने का उपाय बताने के लिए विश्व ग्लोब पर आ जाता हूँ और बापदादा का आह्वान कर, कम्बाइंड स्वरुप में स्थित हो जाता हूँ*।

➳ _ ➳ बाबा से सर्वशक्तियाँ स्वयं में भरकर अब मैं इन शक्तियों को बाबा से ले कर सारे विश्व मे फैला रहा हूँ। *रावण के वर्से को अपना बनाने वाली, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की अग्नि में जल रही आत्माओं पर ये शक्तियां शीतल फुहारों के रूप में बरस रही हैं और उनके अंदर के विकारो की अग्नि की बुझाकर, उन्हें शीतलता का अनुभव करवा रही है*। शीतलता का अनुभव करके वो आत्मायें तृप्त हो रही हैं।

➳ _ ➳ अब मैं फ़रिशता उन आत्माओं को परमात्म परिचय दे कर उन्हें रावण के वर्से से मुक्त होने का उपाय बताने की रूहानी सेवा करके वापिस साकारी दुनिया मे आकर अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर, *सदैव अपने प्रभु राम की छत्रछाया में रहते हुए, स्वयं भी रावण के वर्से से दूर रहते औरों को भी रावण के वर्से से मुक्त रहने और परमात्म वर्सा पाने की युक्ति बताने की सेवा सदैव करती रहती हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं अटेन्शन की विधि द्वारा माया की छाया से स्वयं को सेफ रखने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं हलचल में अचल आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव हर संकल्प में उमंग उत्साह अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा संकल्पों की सिद्धि प्राप्त करती हूँ ।*
✺ *मैं सदा समर्थ आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ देखो, बापदादा 'मैजारिटी' शब्द कह रहा है, सर्व नहीं कह रहा है, मैजारिटी कह रहा है। तो दूसरी बात क्या देखी? क्योंकि कारण को निवारण करेंगे तब नव-निर्माण होगा। तो दूसरा कारण - अलबेलापन भिन्न-भिन्न रूप में देखा। कोई-कोई में बहुत रायल रूप का भी अलबेलापन देखा। *एक शब्द अलबेलेपन का कारण - सब चलता है। क्योंकि साकार में तो हर एक के हर

कर्म को कोई देख नहीं सकता है, साकार ब्रह्मा भी साकार में नहीं देख सके लेकिन अब अव्यक्त रूप में अगर चाहे तो किसी के भी हर कर्म को देख सकते हैं*। जो गाया हुआ है कि परमात्मा की हजार आंखे हैं, लाखों आंखें हैं,लाखों कान हैं। वह अभी निराकार और अव्यक्त ब्रह्मा दोनों साथ-साथ देख सकते हैं। कितना भी कोई छिपाये, छिपाते भी रायल्टी से हैं, साधारण नहीं। तो *अलबेलापन एक मोटा रूप है, एक महीन रूप है, शब्द दोनों में एक ही है 'सब चलता है, देख लिया है क्या होता है! कुछ नहीं होता। अभी तो चला लो, फिर देखा जायेगा!' यह अलबेलेपन के संकल्प हैं*।

➳ _ ➳ बापदादा चाहे तो सभी को सुना भी सकते हैं लेकिन आप लोग कहते हो ना थोड़ी लाज-पत रख दो। तो बापदादा भी लाज पत रख देते हैं लेकिन यह अलबेलापन पुरुषार्थ को तीव्र नहीं बनासकता। पास विद आनर नहीं बना सकता। जैसे स्वयं सोचते हैं ना'सब चलता है'। तो रिजल्ट में भी चल जायेंगे लेकिन उड़ेंगे नहीं। तो सुना क्या दो बातें देखी! परिवर्तन में किसी न किसी रूप से, हर एक में अलग-अलग रूप से अलबेलापन है। तो *बापदादा उस समय मुस्कराते हैं, बच्चे कहते हैं देख लेंगे क्या होता है! तो बापदादा भी कहते हैं देख लेना क्या होता है!* तो आज यह क्यों सुना रहे हैं?क्योंकि चाहो या नहीं चाहो, जबरदस्ती भी आपको बनाना तो है ही और आपको बनना तो पड़ेगा ही। आज थोड़ा सख्त सुना दिया है क्योंकि आप लोग प्लैन बना रहे हो, यह करेंगे, यह करेंगे... *लेकिन कारण का निवारण नहीं होगा तो टैम्प्रेरी हो जायेगा, फिर कोई बात आयेगी तो कहेंगे बात ही ऐसी थी ना! कारण ही ऐसा था! मेरा हिसाब-किताब ही ऐसा है। इसलिए बनना ही पड़ेगा*। मंजूर है ना!

✺ *ड्रिल :- "'सब चलता है'- यह अलबेलापन समाप्त करना"*

➳ _ ➳ आलस्य, अलबेलेपन से मुक्त, तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सदा चढ़ती कला का अनुभव करने वाली मैं आत्मा अपने शिव पिता परमात्मा की मधुर याद में बैठी, संगमयुग की सर्वश्रेष्ठ प्राप्तियों का आनन्द लेते हुए स्वयं पर नाज कर रही हूं... और साथ ही साथ यह भी विचार कर रही हूं कि *कितनी बदनसीब हैं वो आत्मायें जो भगवान को पहचानने के बाद भी आलस्य अलबेलेपन में अपने समय को व्यर्थ गंवा रही हैं... यह सोच कर कि सब चलता है...* यही विचार

करते करते मेरी आँखों के सामने एक दृश्य उभर आता है...

➳ _ ➳ मैं देख रही हूँ एक तरफ भविष्य नई दुनिया सतयुग का गेट और दूसरी तरफ़ संगमयुगी ब्राह्मण बच्चों की दुनिया... जहां *बाबा के वैरायटी ब्राह्मण बच्चे बाबा की श्रीमत अनुसार इस सतयुगी दुनिया के गेट का पास प्राप्त कर इस दुनिया मे ऊंच पद पाने का तीव्र पुरुषार्थ कर रहें हैं...* वही दूसरी ओर अनेक ब्राह्मण बच्चे ऐसे भी है जो आलस्य अलबेलेपन में संगमयुग के अनमोल पलो को व्यर्थ गंवा रहें हैं... गफलत कर रहें हैं... बड़े बड़े प्लैन बना रहें हैं कि यह करेंगे, वह करेंगे... लेकिन उस *प्लैन को दृढ़तापूर्वक प्रेक्टिकल में नही ला रहे...* फिर सोचते हैं कि "सब चलता है... अभी बाकी कौन से सम्पूर्ण बने हैं... लास्ट में बन जायेंगें..."

➳ _ ➳ ऐसे तीव्र पुरुषार्थ करने वाले, और आलस्य अलबेलेपन में समय व्यर्थ गवाने वाले वैरायटी ब्राह्मण बच्चो को मैं देख रही हूँ... इस दृश्य को देख कर मैं *मन ही मन स्वयं से प्रोमिस करती हूं कि मुझे आलस्य अलबेलेपन में भविष्य श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाने वाले संगमयुग के बहुमूल्य पलो को व्यर्थ नही गंवाना है...* बल्कि अपना हर सेकेंड, हर श्वांस परमात्म याद और सेवा में रह कर सफल कर, अपनी श्रेष्ठ प्रालब्ध बनानी है...

➳ _ ➳ यही संकल्प करके अब मैं अशरीरी स्थिति में स्थित हो कर, अपने प्यारे मीठे शिव बाबा की याद में बैठ जाती हूँ... और *सेकण्ड में अपने सूक्ष्म आकारी शरीर को धारण कर, अव्यक्त फरिश्ता बन पहुंच जाती हूँ सूक्ष्म वतन में, बापदादा के पास...* यहां पहुंच कर एक और विचित्र दृश्य मैं देखती हूँ कि आज बापदादा की एक नही बल्कि हज़ारों आंखे हैं जिनसे वो अपने एक - एक ब्राह्मण बच्चे को देख रहें हैं...

➳ _ ➳ बाबा के मन के भावों को, बाबा की हजारों आंखों में जैसे मैं स्पष्ट पढ़ रही हूं... *जो बच्चे सोचते है कि अभी तो चला लो, कुछ नही होता, आगे देख लेंगे... बच्चो की इस बात को सुनकर, कि देख लेंगे क्या होता है, बापदादा भी जैसे मुस्करा रहें है कि देख लेना क्या होता है और चेतावनी दे रहें हैं कि आप चाहो ना चाहो जबरदस्ती भी आपको बनाना तो है और आपको बनना तो

पड़ेगा ही...* इस दृश्य के समाप्त होते ही अब मैं देख रही हूं बाहें पसारे बापदादा का पहले जैसा लाइट माइट स्वरूप जो मुझे सहज ही अपनी ओर खींच रहा है... बाबा की बाहों में अब मैं फरिश्ता समा रहा हूँ... अपनी शक्तिशाली दृष्टि से बाबा मेरे अंदर आलस्य अलबेलेपन से सदा मुक्त रहने का बल भर रहें हैं...

➳ _ ➳ बापदादा से लाइट माइट ले कर, अब मैं अपने फरिश्ता स्वरूप को सूक्ष्म वतन में ही छोड़ कर, अपने निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप को धारण कर पहुंच जाती हूँ परमधाम अपने निराकार शिव पिता परमात्मा के पास उनकी सर्वशक्तियों से स्वयं को भरपूर कर, स्वयं को शक्तिसम्पन्न बनाने... बिंदु स्वरूप में अब मैं स्वय को देख रही हूं अपने बिंदु बाप के बिल्कुल सामने... *उनसे निकल रही अनन्त शक्तियों की किरणें मुझ आत्मा के ऊपर चढ़ी विकारों की कट को उतार कर मुझे शक्तिशाली बना रही हैं...* बाबा से आ रही एक एक किरण मेरे अंदर एक नई स्फूर्ति, एक नई ऊर्जा का संचार कर रही है...

➳ _ ➳ स्फूर्ति और एनर्जी से भरपूर हो कर अब मैं आत्मा अपने साकारी तन में अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर स्वयं को बहुत ही शक्तिशाली अनुभव कर रही हूं... *बाबा की लाइट माइट ने मुझे डबल लाइट बना दिया है... मन पर अब किसी भी प्रकार का कोई बोझ नही... आलस्य, अलबेलेपन से मुक्त स्वयं को सदा बलशाली अनुभव करते हुए, उमंग उत्साह से आगे बढ़ते, औरों को भी आगे बढ़ाने का तीव्र पुरुषार्थ कर रही हूं...* दृढ़तापूर्वक हर प्लैन को प्रेक्टीकल में लाने से, कदम कदम पर परमात्म मदद का अनुभव मुझे सहज ही सफ़लतामूर्त बना रहा है... *"कर लेंगे, हो जायेगा" के बजाए "करना ही है" इस पाठ को पक्का कर बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के लक्ष्य की ओर अब मैं अपने कदम बढ़ा रही हूं...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

ॐ शांति